

माइक्रो और लघु उद्यमों (एमएसएमई) को समय पर और पर्याप्त ऋण उपलब्धता सुनिश्चित करने का एक प्रभावी उपाय*

के. सी. चक्रवर्ती

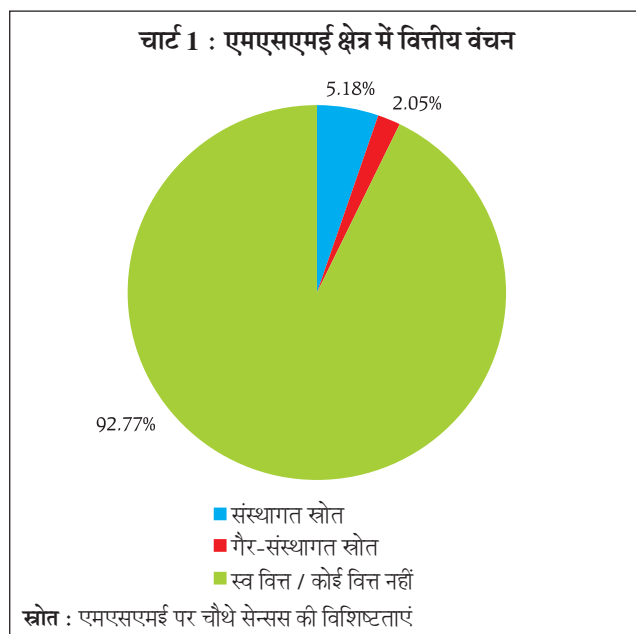
सुश्री जेनिफर इर्स्न, प्रबंधक, दक्षिण एशिया परामर्शी सेवाएं, अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (आइएफसी); श्री एस.के. दुबे, सीएमडी, केनरा बैंक; श्री एच.एस.यू. कामत, सीएमडी, विजया बैंक; श्रीमती अर्चना भार्गवा, सीएमडी, युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया; श्री अश्विनी कुमार, सीएमडी, देना बैंक; श्री एस. आर. बंसल, सीएमडी, कोर्पोरेशन बैंक; श्री सुशील मुहनोत, सीएमडी, बैंक ऑफ महाराष्ट्र; डॉ. दीपाली पंत जोशी, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक; विभिन्न वाणिज्य बैंकों के कार्यपालक निदेशकों एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों; श्री सुरेश संकरन, श्री नील रामस्तेन तथा श्री केमेरोन इवान्स, आइएफसी से संसाधन सदस्य; भारतीय रिजर्व बैंक के सदस्य; देवियों और सज्जनों! मेरे लिए यह एक खुशी की बात है कि आज सुबह मैं आपके बीच माइक्रो और लघु उद्यमों (एमएसएमई) को समय पर और पर्याप्त ऋण उपलब्धता सुनिश्चित करने के एक सामायिक विषय पर मुख्य संबोधन प्रस्तुत करने हेतु उपस्थित हुआ हूँ। यह एक ऐसा विषय है जो मेरे दिल के बहुत करीब है और इसलिए साख अंकन मॉडेल पर इस कार्यशाला को शुरू करने के लिए मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ जिसका मूल उद्देश्य है ऐसे लोगों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी प्रदान करना जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे इसे अपने दैनंदिन कार्यों में इस्तेमाल करें और जिसके द्वारा बैंकिंग क्षेत्र में क्षमता निर्माण हो सके।

2. जैसाकि आपको ज्ञात है, नीति निर्माताओं के लिए विकसित तथा विकासशील दोनों अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक

* 29 नवंबर 2013 को मुंबई में एमएसएमई उधार के लिए आइएफसी के सहकार्य से साख अंकन मॉडेल पर प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान भारिबैं के उप गवर्नर डॉ. के.सी. चक्रवर्ती द्वारा दिया गया मुख्य व्याख्यान। उन्होंने सुश्री लिलि वंडेरा से प्राप्त सहयोग के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया है।

विकास बनाए रखने हेतु एक सक्रिय माइक्रो, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र को प्रोत्साहन देना प्राथमिकता है। भारत में भी, एमएसएमई क्षेत्र रोजगार उत्पन्न करने, सीमा पर व्यापार तथा उद्यमता की भावना को प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र कई विभिन्न प्रकारों से जैसेकि ग्रामीण और शहरी जनता के लिए रोजगार अवसर सृजित करना, नवीन समाधानों के प्रयोग से वहनीय कीमत पर वस्तुओं और सेवाएं प्रदान करना तथा देश की निर्यात पहल को सहायता करके आर्थिक विकास में सहायता प्रदान करता है। वास्तव में, नीति निर्माताओं द्वारा यह अधिक स्वीकार किया जाता है कि यदि भारत को अपनी उच्च संवृद्धि प्रक्षेप पथ (ट्रजेक्टरी) पुनः प्राप्त करना हो तो उसे एक जोशपूर्ण एमएसएमई क्षेत्र की आवश्यकता है। तथापि, यह निंदनीय है कि क्षेत्र को सहायता देने हेतु एक व्यापक आवश्यकता को पहचानने के बावजूद आधार स्तर की प्रगति अत्यंत फीकी है तथा क्षेत्र में वित्तीय वंचन बहुत ही अधिक है। औपचारिक वित्तीय क्षेत्र द्वारा विशेष रूप से एमएसएमई तक पहुंचने में थोड़ी अरुचि, इस क्षेत्र की कंपनियों की संभाव्यता को आंकने में उनकी ही अक्षमता से उत्पन्न होती है। इसी संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि साख अंकन मॉडेल इस क्षेत्र को बेहतर समझने और मूल्यांकन करने में एक बहुमूल्य साधन सिद्ध होगा। जैसाकि आपने समय-सारणी से देखा होगा कि आज की प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य है एमएसएमई क्षेत्र को उधार हेतु निर्णय लेने में साख अंकन मॉडेल के लाभ की जानकारी प्राप्त करना है। आज आइएससी से आए हुए अनुभवी व्यवसायियों की मंडली दिनभर तकनीकी सत्र चालेंगे जिससे आपको प्रक्रिया की बारीकीयां समझने में मदद मिलेगी। आज के मेरे संबोधन में मैं चाहता हूँ कि जहां तक संस्थागत वित्त तक पहुंचने का संबंध है, उसमें इस क्षेत्र को होनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला जाए, साख अंकन मॉडेल का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाए तथा साख निर्धारण और साख अंकन मॉडेलों के आस-पास कतिपय साधारण गलतफहमियां दूर करने की कोशिश की जाए।

3. एमएसएमई क्षेत्र की चौथी संगणना में संकलित आंकड़ों से यह पता चला है कि इकाइयों (पंजीकृत और स्रोतों अपंजीकृत दोनों) का केवल 5.18 प्रतिशत ने



संस्थागत स्रोतों के माध्यम से वित्त का उपभोग किया है, 2.05 प्रतिशत ने गैर-संस्थागत स्रोतों के माध्यम से वित्त प्राप्त किया तथा अधिकांश इकाइयों अर्थात् 92.77 प्रतिशत के पास वित्त नहीं था या स्ववित्त पर निर्भर थे (चार्ट 1)।

क. वित्त की पहुँच में माइक्रो और लघु उद्यमों की बाधाएं

4. जैसाकि मैंने पहले उल्लेख किया था, यह क्षेत्र बैंकिंग क्षेत्र से वित्त प्राप्त करने में बाधाओं का सामना कर रहा है। इसका कारण कुछ हद तक दूरस्थ बैंक रहित कम बैंक वाले क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का अपर्याप्त प्रवेश जिसको भारतीय रिजर्व बैंक संरचित वित्तीय समावेशन प्लान के माध्यम से जोड़ने हेतु बैंकों को प्रोत्साहित कर रहा है। दूसरा मामला जो एक बाधक घटक है वह है ऋण की कीमत निर्धारण। हमारे विचार से एमएसई क्षेत्र के लिए ऋण की कीमत निर्धारण बहुत पारदर्शी नहीं है और वहनीय भी नहीं है। चयनित प्रमुख बैंकों द्वारा किए गए एक नमूना अध्ययन में उधारकर्ताओं को 31 मार्च 2013 की स्थिति के अनुसार लगाए माध्यिका ब्याज दर 13 प्रतिशत रहा।

ख. वित्त के वैकल्पिक स्रोत का अभाव

5. वित्त के वैकल्पिक स्रोत यथा इक्विटी वित्त, ऐंजल निधि/जोखिम पूंजी तक पहुँचने में एमएसएमई (विशेषकर

नवीन प्रक्रिया (इनोवेशन) और नई प्रौद्योगिकी से जुड़े) की क्षमता नितान्त सीमित है। फिलहाल, इस क्षेत्र में इक्विटी पूंजी का प्रवाह लगभग नगण्य है जो ज्ञान-आधारित उद्योग विशेषकर वे जो अपेक्षित विशेषज्ञता और ज्ञान सहित प्रथम पीढ़ी उद्यमियों द्वारा उभरे हैं, के विकास को गंभीर चुनौती देता है। अतः कई बार उच्च-संवृद्धि संभाव्यता तथा शुरूआती एसएमई के लिए उपक्रम/जोखिम पूंजी अधिक उपयुक्त वित्तीय लिखत होता है। तथापि, इस प्रकार के वित्त तक की पहुँच कई बार उनको उपलब्ध नहीं होती है। वित्त के वैकल्पिक स्रोत के अभाव में एसएमई की कर्ज वित्त पर निर्भरता अधिक होती है। तथापि, कर्ज वित्त की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है क्योंकि इन लघु इकाइयों की व्यावहारिकता एक प्रमुख मुद्दा है। इसके अतिरिक्त, ऋण की उच्च लागत सहित कर्ज पर अधिक निर्भरता, शुरूआती एसएमई की वित्तीय व्यावहारिकता पर विशेषकर आरंभिक वर्षों में प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा जिससे उनका दीर्घकालिक अस्तित्व और संवहनीयता को खतरा हो सकता है।

ग. क्षेत्र को उधार देने में बैंकों की बाधाएं

6. एमएसएमई विशेषकर माइक्रो और लघु उद्यमों को, प्रमुख चुनौतियों में से बैंकिंग क्षेत्र से समय पर और पर्याप्त ऋण प्राप्त करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। एमएसई को सेवाएं प्रदान करने हेतु उधारदाताओं कई कारणों से अनिच्छुक रहते हैं जिसमें से सर्वप्रथम कारण है लघु और मध्यम उधारकर्ताओं को उधार प्रदान करने का ऋण जोखिम बहुत अधिक है जो कि बैंकों के बीच एक आम धारणा से उत्पन्न होता है। यह स्वयं में ही एक गलत धारणा है जिसे मैं हार्ड डाटा की सहायता से मेरे प्रस्तुतीकरण के माध्यम से दूर करने की कोशिश करता रहता हूँ। जबकि अनर्जक आस्तियों (सकल और निवल अनर्जक आस्तियां) की शीर्ष संख्या इस चरण में अधिक है, यदि मध्यम और बड़े उधारकर्ताओं के स्तर में सहायक सिद्ध होने वाले पुनर्संरचना और बट्टे खाते डालने की सीमा की गणना की जाए तो एसएसई क्षेत्र में ऋण जोखिम काफी कम दिखाई देगी। पिछले पांच वर्षों के दौरान माइक्रो और लघु की तुलना में मध्यम और बड़े स्तरों में एनपीए, पुनर्संरचना और संचयी बट्टे खाते डालने की सीमा दर्शाती हुई एक तुलनात्मक सारणी नीचे प्रस्तुत है :

सारणी 1: हासित आस्ति अनुपात

(प्रतिशत)

स्तर	मार्च-2009	मार्च-2010	मार्च-2011	मार्च-2012	मार्च-2013
माइक्रो+ लघु	10.7	10.6	9.4	9.7	10.6
मध्यम+ बड़ा	7.8	9.4	8.0	11.2	14.8

हासित आस्ति अनुपात = (जीएनपीए + पुनर्चित मानक अग्रिम + कुल बढ़ा खाता राशि) और (कुल अग्रिम + कुल बढ़ा खाता राशि)

सारणी 2: एमएसई खंड में पुनर्संरचना

(प्रतिशत)

		मार्च-2009	मार्च-2010	मार्च-2011	मार्च-2012	मार्च-2013
माइक्रो + लघु	सकल एनपीए अनुपात शेष	3.63	4.29	3.96	4.44	5.19
	मानक अग्रिम /कुल सकल अग्रिम	2.99	2.67	2.05	1.69	1.68
मध्यम + बड़ा	सकल एनपीए अनुपात शेष	1.36	1.60	1.37	2.22	3.25
	मानक अग्रिम/कुल सकल अग्रिम	4.80	6.39	5.04	7.52	9.80

उक्त डाटा स्पष्टतः विशिष्ट रूप से इस तथ्य को दर्शाता है कि बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ती हासित आस्तियों के हाल के परिदृश्य में एमएसई ही ने बेहतर ऋण व्यवस्था प्रदर्शित किया है जिससे हासित आस्तियों में कमी आई है।

7. एमएसई को क्यों उच्च जोखिम माना जाता है इसके अन्य कारण हैं अपर्याप्त आस्तियां और न्यून पूंजीकरण, बाजार अस्थिरता और उच्च मृत्यु दरों के प्रति असंवेदनशीलता। एमएसई के लेखा अभिलेखों का अभाव, अपर्याप्त वित्तीय विवरणों या कारोबारी प्लानों से उत्पन्न सूचना अपारदर्शिता से भी संभाव्य लेनदारों को एमएसई आवेदनकर्ताओं की ऋणपात्रता के मूल्यांकन में कठिनाई होती है। इसके अलावा, जहां तक एमएसई वित्तपोषण का संबंध है, छोटी राशियों में उधार की उच्च प्रशासनिक/लेन-देन लागत भी बैंकों पर दबाव डालती है। उपरोलिखित कारणों के गुणों के बावजूद मैं यह कहूंगा कि बैंक के उधार में प्रमुख बाधा इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि बैंक की ऋण मूल्यनिर्धारण की वर्तमान प्रणाली तथा संबंधित प्रक्रियाएं एमएसई क्षेत्र की वित्तीय अपेक्षाओं का मूल्य निर्धारण करने हेतु तैयार नहीं की गई है।

8. बावजूद इसके, कुछ वर्षों में बैंकों द्वारा इस क्षेत्र को प्रदान ऋण में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। मार्च 2013 के अंत की स्थिति के अनुसार, सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों

(एससीबी) द्वारा एमएसई क्षेत्र को उपलब्ध कराया गया कुल बकाया ऋण में 29.77 प्रतिशत की वृद्धि के साथ मार्च 2012 में ₹5,276 बिलियन की तुलना में ₹6,847 बिलियन रहा। इस क्षेत्र के वित्तपोषण में वृद्धि के बावजूद इसमें काफी ऋण अंतराल है जिसको पूरा करने की आवश्यकता है। बारहवीं पंच वर्षीय योजना (2012-2017) हेतु कार्यकारी समूह के अंतर्गत एमएसएमई उप-समूह के लिए निजी क्षेत्र निवेश की रिपोर्ट के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र के लिए 2013-14 में कुल मांग की तुलना में प्रतिशत के रूप में ऋण अंतराल 56 प्रतिशत रहा जैसाकि निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी 3: एमएसएमई के अनुमानित बकाया ऋण मांग और आपूर्ति

(₹ करोड़)

वर्ष	कुल मांग	कुल आपूर्ति	अचर ऋण अंतराल	कुल मांग के प्रतिशत की तुलना में ऋण अंतराल
2010-11	20,92,500	7,37,161	13,55,339	65
2011-12	23,08,384	8,74,482	14,33,902	62
2012-13	25,41,574	10,38,948	15,02,626	59
2013-14	28,03,628	12,37,539	15,66,089	56
2014-15	30,89,863	14,77,928	16,11,935	52
2015-16	34,05,845	17,69,659	16,36,186	48
2016-17	37,57,755	21,24,644	16,33,111	43

स्रोत : 12वां पंचवर्षीय प्लान (2012-2017) के लिए कार्यकारी समूह के अंतर्गत एमएसएमई उप-समूह के लिए निजी क्षेत्र निवेश की रिपोर्ट

9. इस क्षेत्र के लिए वैकल्पिक निधियन स्रोत के अभाव में इस निधियन अंतराल को पूरा करने में बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, बैंकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने मौजूदा ग्राहक आधार तथा बड़े कोर्पोरेट के परे देखें और माइक्रो और लघु उद्यमों की बड़ी संख्या तक पहुंचें जो फिलहाल बैंक ऋण से वंचित है। अपनी बैंकिंग सेवाएं पहुँच प्रदान करने के साथ-साथ प्रस्तुत उत्पादों को सुधारने और उसे रुचि के अनुसार बनाने, मूल्य निर्धारण पहलुओं को ठीक करने तथा सेवाओं की गुणवत्ता और क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता होगी। इसके लिए बैंकों के पास एक उचित कारोबार प्लान तथा डिलिवरी मॉडेल होना चाहिए जो प्रौद्योगिकी लाभों को काम में ला सके। इससे उत्पाद डिलिवरी की योजना बनाने तथा मजबूत ग्राहक संबंध

विकसित करने में सहायता मिलेगी जिससे उच्च राजस्व प्राप्त होगा। बैंकिंग लेन-देनों की लागत को प्रभावशाली रूप से घटाने की आवश्यकता है जैसाकि टेलीकॉम जैसे कई अन्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के आगमन के बाद किया गया है।

घ. वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीक की आवश्यकता

10. रोजगार सृजनता के प्रति योगदान के संदर्भ में इस क्षेत्र के महत्व को समझते हुए हमारे लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र को उधार प्रदान करने में उचित रूप से वृद्धि हो रही है। यहां हमें यह समझने की आवश्यकता है कि माइक्रो और लघु उद्यमों के मामलों में क्रेडिट प्रणाली बड़े निगमों की प्रणाली जैसे नहीं होती जहां उधारकर्ता कारोबारी प्लानों तथा फर्म के वित्तीय विवरणों के बारे में विस्तृत जानकारी देने में सक्षम हैं और उधारदाता विश्लेषणात्मक रूप से डाटा की समीक्षा ध्यानपूर्वक करता है जो कि अधिक समय लेनेवाला और मंहगा होता है। ऋण की अपेक्षाकृत छोटी मात्रा के मदेनजर बैंकों को कीमत और लाभ दोनों के संबंध में एसएमई क्रेडिट प्रस्तावों के विस्तृत मूल्यांकन करना लाभकर प्रतीत नहीं होता। अतः यदि बैंकों को अत्याधिक संसाधनों का व्यय किए बिना एसएमई ऋण प्रस्तावों का त्वरित मूल्यांकन करना हो तो मूल्यांकन प्रक्रिया की क्षमता सुनिश्चित करना अनिवार्य होगा। उधार प्रदान करने के निर्णयों के संदर्भ में क्षमता के प्रति एक महत्वपूर्ण पहलू है शीघ्रता जिससे एकल उधार निर्णय लिया जाता है। भावी भुगतान निष्पादन के बेहतर निर्धारण से क्षमता में सुधार होता है ताकि उधारदाता यह चयन कर सके कि किसे स्वीकार करना है और किसे स्वीकार नहीं करना है।

11. विकसित देशों में वित्तीय संस्थाएं इस चुनौती का सामना करने हेतु कई प्रकार के भिन्न-भिन्न उधार तकनीक का प्रयोग करते हैं और लघु फर्मों को निधियन उपलब्ध कराते हैं। इन देशों में बैंक भावी उधारकर्ताओं को निर्धारित करने हेतु साख-अंकन (क्रेडिट स्कोरिंग) नामक एक कंप्यूटरीकृत ऋण-मूल्यांकन प्रणाली रूपान्तर का प्रयोग करते हैं। साख-अंकन दृष्टिकोण जो कंप्यूटर प्रौद्योगिकी और पुंज (मास) उत्पादक पद्धतियों के प्रयोग पर आधारित है, मूलतः उपभोक्ता ऋण संभालने के लिए तैयार किया गया था लेकिन अब छोटे कारोबारों के संभाव्य ऋण चूकों

का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें उधार देने हेतु प्रभावशाली रूप से इस्तेमाल किया जा रहा है। साख-अंकन, छोटे कारोबारों हेतु ऋण मूल्यांकन की पारंपरिक पद्धति, जिसमें बैंकों के गुणात्मक निर्णय के आधार पर ऋण अनुमोदित किए जाते थे तथा मूल्यांकन प्रक्रिया में वित्तीय स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता था के स्थान पर एक आधुनिक विकल्प प्रस्तुत करता है।

12. एमएसई फर्मों को शीघ्र ऋण प्रवाहित करने के मदेनजर भारतीय रिजर्व बैंक ने अग्रसक्रिय उपाय के रूप में मई 2009 में दिशा-निर्देश जारी किए जिसमें बैंकों को 2 करोड़ रुपए तक के सभी अग्रियों के मामलों में उधार संबंधी निर्णय लेने के लिए अंकन मॉडल का प्रयोग करने हेतु सूचित किया गया था। तथापि, लगभग पांच वर्ष पूर्व जारी किए गए हमारे निर्देशों के बावजूद हम यह पाते हैं कि साख-अंकन मॉडल सही मायनों में भारत में शुरू नहीं हुआ है। हमारा मूल्यांकन यह रहा है कि कदाचित एमएसई उधार संबंधी निर्णय लेने में साख-अंकन मॉडल का प्रयोग करने में बैंकों की अरुचि का एक कारण विषय पर वैचारिक स्पष्टीकरण का अभाव हो सकता है। वास्तव में, कई बार साख अंकन को साख निर्धारण के साथ गलत या असंगत समझा जाता है। अतः आज मेरी चर्चा के अगले चरण में मैं तीन प्रश्नों यथा साख-अंकन क्या है? वह कैसे कार्य करता है? और उसके लाभ क्या है? के उत्तर देने का प्रयास करूंगा।

ड. साख - अंकन क्या है?

13. साख-अंकन एक सांख्यिकीय तकनीक है जो एक उधारकर्ता के ऋण पात्रता का मूल्यांकन करने हेतु विभिन्न वित्तीय अभिलक्षणों को जोड़ता है। अंकन किसी एक कंपनी के भुगतान करने की क्षमता नहीं बल्कि यथासमय ढंग से भुगतान करने की इच्छा का पूर्वानुमान लगाता है।¹ चूक की संभाव्यता जैसाकि मॉडल द्वारा अनुमान लगाया गया, वे समान विशेषताओं वाले पिछले आवेदनकर्ता के विश्लेषण पर आधारित होते हैं। ऋण अंककार्ड 'पिछले आवेदनकर्ता के निष्पादन के आधार पर नए आवेदनकर्ता के व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने के लिए एक साधन है' (यू.एस.मुद्रा

¹ साख अंकन और लघु कारोबार : एक समीक्षा तथा अनुसंधान की आवश्यकता (लोगेनेकर, कार्लोस डब्ल्यू.नूरी और विलियम पेड्री)

नियंता, 1998)। अंककार्ड समान विशेषताओं वाले खातों के पिछले अनुभव के आधार पर वर्तमान खातों के निष्पादन का पूर्वानुमान लगाने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

14. साख अंकन एक मॉडेल है जो बैंकों द्वारा एसएमई के ऋण अनुरोधों का मूल्यांकन और अनुमोदन या उसे अस्वीकार करने हेतु प्रयुक्त किया जाता है। चूंकि कारोबारी मालिक के भुगतान व्यवहार और कारोबारी मालिक के बीच एक मजबूत संबंध होता है, एसएमई साख अंक में सामान्यतः कारोबार तथा कारोबारी मालिक दोनों से वित्तीय विशेषताएं शामिल होती हैं। साख अंकन जानकारी पर आधारित होता है जैसेकि पिछले ऋण की चुकौती कैसे हुई, उद्यम का चालू आय स्तर क्या है, बकाया कर्ज, यदि कोई हो, कौनसे हैं? यह उद्यम की साख इतिहास पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रक्रिया के एक भाग के रूप में उधारदाता यह देखता है कि क्या उद्यम/कारोबारी मालिक के पास ऋण चुकौती के लिए विश्वसनीयता और ईमानदारी है। ये यह भी जांच करता है कि उद्यम ने ऋण पहले कैसे इस्तेमाल किया, उपयोगिता बिल सहित बिल चुकौती के उसके रिकार्ड, उद्यम का अस्तित्व कब से है, उद्यम द्वारा धारित आस्तियां तथा गतिविधियों की वहनीयता और व्यावहारिकता जिसमें इकाई कार्यरत है। साख अंकन मॉडेल समान विशेषताओं वाले ऋणों के निष्पादन पर ऐतिहासिक जानकारी से इनपुट आहरित करता है।

साख अंकन की पृष्ठभूमि

15. उपभोक्ता क्रेडिट बाजार अर्थात् बंधक, क्रेडिट कार्ड और ऑटो ऋणों में कई वर्षों से साख अंकन व्यापक रूप से उपभोग में लाया जा रहा है। इस मॉडेल ने उधार कार्यविधि को सरल बनाया है जिससे कम लागत के ऋण उपलब्ध हुए तथा शीघ्र निर्णय लिए गए और इसके फलस्वरूप उपभोक्ता ऋण उपलब्धता में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। एकल केंद्र होने के नाते लघु कारोबार की समानता के कारण साख अंकन मॉडेल के अंतर्गत एकल उधारकर्ताओं को उधार देने का निर्णय लेने के लिए प्रयुक्त सिद्धांतों को लघु कारोबारों की ऋण अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु व्यापक बनाया गया। 1990 के मध्य में फेयर आइसेक एंड कंपनी ने केवल एसएमई

के लिए लघु कारोबार अंकन सेवा (एसबीएसएस) नामक प्रथम साख अंकन मॉडेल विकसित किया। तब से यू.एस तथा कनाडा सहित यू.के और जापान में कई एसएमई बैंकों ने एसएमई उधारकर्ताओं के लिए किसी न किसी प्रकार का साख अंकन कार्यान्वित किया है।

साख अंकन और साख-निर्धारण में अंतर

16. प्रायः मैंने बैंकों को साख अंकन और साख-निर्धारण पर एक समान बात करते हुए देखा है। अतः आगे बढ़ने से पहले कृपया मुझे साख अंकन और साख-निर्धारण में अंतर को स्पष्ट करने दें। मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि ये दोनों सम्पूर्णतया दो भिन्न अवधारणाएं हैं और उन्हें अलग-अलग भिन्न परिदृश्यों में प्रयोग किया जाना है। अतः ये अंतर क्या है? साख अंकन एक सांख्यिकी तकनीक है जो एक उधारकर्ता की ऋण पात्रता का मूल्यांकन करने हेतु विभिन्न पूर्व निर्धारित विशेषताओं को जोड़कर एक एकल स्कोर बनाता है। किसी आवेदन का आबंटित स्कोर होता है, मूल्यांकों द्वारा दिए गए उचित महत्त्व का जोड़ जो सम्मिलित विशेषताओं द्वारा उस आवेदन के लिए लिया जाता है।

किसी दो समान आवेदनों को हमेशा समान स्कोर प्राप्त होगा। दूसरी ओर साख निर्धारण क्रेडिट अधिकारी के अनुभव और विवेक पर अधिक निर्भर होता है तथा वित्तीय सांकेतिकों का प्रमुखतः प्रयोग करता है। स्कोरिंग का उद्देश्य है हस्त विश्लेषण तथा ऋणों में अनुमोदन को कम लागत पर शीघ्र दोहराना जबकि साख निर्धारण, टूल द्वारा उपलब्ध निर्धारण पूरा करने के लिए क्रेडिट अधिकारियों द्वारा किए गए हस्त विश्लेषण पर निर्भर है।

17. स्पष्ट शब्दों में साख अंकन क्रेडिट स्क्रिनिंग / निर्णय लेने में एक फुटकर उधार दृष्टिकोण का प्रयोग करता है तथा इसकी सिफारिश छोटे टिकट वाले ऋण, जहां उधारकर्ता के बारे में विश्वसनीय डाटा उपलब्ध नहीं होता, के लिए की जाती है। दूसरी ओर, साख निर्धारण बड़े, मध्य स्तरीय या कार्पोरेट ऋण जहां उचित वित्तीय डाटा/ कारोबार प्लान होता है और जो आगे क्रेडिट विश्लेषण और जानकारी के लिए आधार उपलब्ध कराता है, के लिए अधिक उचित टूल है। एक बार फिर, साख अंकन सामान्यतः पूर्व-परिभाषित

मानदंडों के आधार पर ऋण आवेदकों को स्क्रीन करने के लिए एक शत प्रतिशत स्वचालित तंत्र है जबकि साख निर्धारण और अधिक व्यक्तिपरक तथा पूर्व-निर्धारित कसौटी के आधार पर एक उधारकर्ता की चुकौती क्षमता तय करने की एक हस्तचालित पद्धति है। साथ ही, साख अंकन द्वारा तत्काल अनुमोदन, गिरावट या अपरिभाषित क्षेत्र ऋणों जैसे स्पष्ट निर्णय मेट्रिक्स संभव है जिसकी समीक्षा अधिक गहनता से की जा सकती है। अस्वीकृत ऋणों को शीघ्र “निकाला जाता है” जबकि मजबूत प्रस्तावों को तत्काल अनुमोदन प्राप्त होता है। अतिरिक्त आकलन, यदि कोई हो, करने की आवश्यकता केवल अपरिभाषित क्षेत्र ऋणों या प्रस्तावों जो न ही अनर्ह ‘हां’ है और न ही अनर्ह ‘नहीं’ है के संबंध में होती है। इसके विपरित, ऋण अंकन में सभी ऋण आवेदनों के लिए ऋण विश्लेषण का एक समान स्तर की आवश्यकता होती है तथा यह अधिक व्यापक स्वरूप का होता है अतः प्रति ऋण लेन-देन की लागत बढ़ जाती है।

च. अंकन मॉडल कैसे कार्य करता है?

18. अंकन मॉडल का उद्देश्य होता है ऋण निष्पादन आंकने के लिए एक उचित और प्रतिनिधिक नमूने का प्रयोग करना और उसके बाद अभिलक्षणों को विकसित करना जो निष्पादन का पूर्वानुमान लगाता है। परिणामी मॉडल को निर्णय सृजन प्रक्रम में संकलित किया जाता है। एक अंकन मॉडल, निष्पादन का पूर्वानुमान लगाने में प्रयुक्त अभिलक्षणों को अलग-अलग भार लगाता है। यह भार या मूल्य, परिणाम पर उस अभिलक्षण के प्रभाव को नापता है। भार तथा प्रभाव का स्तर का निर्धारण सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा किया जाता है। केवल वे अभिलक्षण जो ‘अर्थपूर्ण’ प्रभाव पर जोर देता है, अंतिम मॉडल में शामिल किए जाते हैं। किसी आवेदन को आंबटित अंक वह होता है जो मूल्यों द्वारा दिए गए उचित भारों का जोड़ उस आवेदन के लिए सम्मिलित अभिलक्षणों द्वारा लिया जाता है।

इस मॉडल के अंतर्गत, किसी दो समान आवेदनों को हमेशा एक समान अंक प्राप्त होंगे। ऐसा हस्तचालित जोखिम अंकन में नहीं होता जहां निर्णय एक उधारदाता से दूसरे तक या उसी उधारदाता द्वारा उस दिन की विवेचना पर आधारित निर्णय परिवर्तित हो सकता है।

छ. साख अंकन के लाभ

19. उचित ढंग से प्रयोग किए जाने पर, साख अंकन बहुपणधारियों के साथ-साथ साहूकारों, उधारकर्ताओं और समग्र अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचा सकता है। साहूकार के लिए, अंकन से संसाधित स्वचालनीकरण होता है जो प्रक्रिया सुधार को सुगम बनाता है जिससे बेहतर प्रबंधन जानकारी, नियंत्रण और अनुरूपता जैसे कई गौण उत्पाद बन जाते हैं। यह ऋण अनुमोदित करने के लिए लगने वाले समय और लागत को कम करते हुए एसएसई उधार की लाभप्रदता भी बढ़ाता है तथा उधार प्रदान करने के अवसरों को बढ़ाते हुए राजस्व बढ़ाना है क्योंकि उधारदाता सीमांत आवेदकों को निर्भय स्वीकार कर सकते हैं जो कि एक एकल हामीदार शायद अस्वीकृत कर दें। अंतरराष्ट्रीय प्रमाण यह दर्शाता है कि साख अंकन बुनियादी लाभ/मूल्य संबंधी ताल-मेल जो बैंकों को एक संभाव्य उधारकर्ता संबंधी जानकारी प्राप्त करने में निवेश करने या ना करने का निर्णय लेते समय सामना करना पड़ता है, को काबू करने में सहायता कर सकता है। यू एस में साख अंकन स्थिति की जांच करने हेतु किए गए एक अध्ययन ने यह अनुमान लगाया कि साख अंकन का प्रयोग करते हुए माइक्रो ऋण आवेदनों के मूल्यांकन की लागत घट कर लगभग 100 अमरीकी डॉलर हो गयी जबकि साख अंकन की शुरुआत से पहले यह 500 अमरीकी डॉलर - 1,800 अमरीकी डॉलर की सीमा में रहती थी। इसमें से जो समय बचे उसमें बैंक मार्जिनल आवेदनों, वर्तमान ऋण जो कठिनाई दर्शाते हैं तथा अधिक आवेदन प्रोसेसिंग पर अधिक समय केंद्रित कर सकते हैं। साख अंकन के प्रयोग का तात्पर्य यह भी है कि संपार्श्विक लेना और उसके रख-रखाव के लिए मार्जिनल लाभ छोटे ऋणों के लिए न्यायोचित नहीं है।

20. बैंक ऑफ इंग्लैंड ने भी यह स्वीकृत किया है कि ऐसे कतिपय बैंक हैं जो साख अंकन का प्रयोग करते समय गैर जमानती आधार पर उधार देने के लिए इच्छुक हैं जो अत्यंत लघु और आरंभिक लघु और मध्यम उद्यमों के लिए बैंक वित्त की पहुँच को संभवतः सुधारता है।

21. उधारकर्ता के लिए साख अंकन से लाभों द्वारा क्रेडिट पहुँच बढ़ती है और कतिपय मामलों में उधार लागत कम

होती है। फेडरल रिजर्व बैंक (एफआरबी) ऑफ एटलांटा ने क्रेडिट पहुँच पर एसएमई साख अंकन के प्रभाव पर अपने अध्ययन में यह पाया कि सामान्यतः साख अंकन के प्रयोग से बैंकों द्वारा लघु और मध्यम उद्यमों को प्रदान ऋण की राशि में बढ़ोत्तरी हुई है। उसने यह पाया कि अंकन का प्रयोग करने वाले बैंक संभवतः उन लघु और मध्यम उद्यमों को उधार प्रदान करते थे जिसके पास पारंपरिक जोखिम अंकन पद्धति के माध्यम से अनुमोदन के लिए पर्याप्त वित्तीय जानकारी नहीं होती थी। संभवतया इसका कारण अंकन प्रक्रिया में कारोबार मालिक की व्यक्तिगत जानकारी शामिल करना हो सकता है। अध्ययन से यह भी पता चला कि अंकन का प्रयोग करने वाले बैंक संभवतः कम-आय क्षेत्रों में उधार देते हैं और यथार्थता यह जोखिम अंकन प्रक्रिया में और अधिक वस्तुनिष्ठता प्रदान करता है।

ज. निष्कर्ष

22. समाप्त करने से पहले मैं इस बात पर पुनः बल देना चाहूंगा कि एसएमई क्षेत्र में वंचन की सीमा तथा अर्थव्यवस्था हेतु क्षेत्र के महत्त्व को देखते हुए बैंकों को इस क्षेत्र को तत्काल उधार बढ़ाने की आवश्यकता है। ऋण प्रस्तावों का मूल्यांकन करने तथा एसएमई वित्त-पोषण सुगम करने हेतु बैंकों को कम लागत वाले और त्वरित निर्णय लेने वाले विकल्पों को प्रयोग में लेने की आवश्यकता है। साख अंकन मॉडलों के प्रयोग से लागत को कम करते हुए और सेवा स्तर को बढ़ाते हुए उधार संबंधी निर्णय सुगम बनाए जा सकते हैं जो उधारदाताओं तथा एमएसई उधारकर्ताओं दोनों को प्रचुर लाभ पहुँचा सकते हैं।

23. मैं आशा करता हूँ कि आइएफसी संसाधन अधिकारी के तकनीकी सत्र से साख अंकन मॉडल के बारे में आपकी शंकाओं का समाधान होगा तथा आपको एक उचित मॉडल अपनाने में प्रेरित करेगा जो इस क्षेत्र को तेजी से ऋण उपलब्ध कराने में मददगार होगा। सभी नई अवधारणाओं की तरह उच्च प्रबंध-तंत्र स्तर पर इस अवधारणा की बाइ-इन की आवश्यकता है और आज का यह सम्मेलन का प्रयास इसी ओर है। मुझे विश्वास है कि आज के सम्मेलन के अंत में आपको एसएमई के वित्त पोषण में साख अंकन मॉडल के प्रयोग तथा अवधारणा के बारे में पर्याप्त स्पष्टीकरण प्राप्त

होगा। सम्मेलन आयोजित करने का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब एसएमई वित्त पोषण के प्रति बैंक किस प्रकार की राय रखता है उसके बारे में हम यदि बैंकों के पुर्वाग्रह (माइंड सेट) तथा स्वेच्छा को बदल सकेंगे। यदि बैंक एसएमई उधार को लाभदायक कारोबारी प्रस्ताव मानता है तथा इस क्षेत्र को ऋण कवरेज बढ़ाने में अपनी इच्छा और संकल्पना दर्शाता है तो साख अंकन मॉडलों को इस उद्देश्य को अर्थपूर्ण तरीके से प्राप्त करने हेतु प्रभावी रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है। यह सभी पणधारियों : लघु और मध्यम उद्यमों, उधारदाता वित्तीय संस्थानों तथा समग्र अर्थव्यवस्था के लिए जीत का आभास दिलायेगा। मैं आइएफसी संसाधन अधिकारी को पुनः धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमारे प्रयास को उत्साहपूर्वक समर्थन प्रदान किया तथा आप सभी को एक सफल विचार-विमर्श की कामना करता हूँ।

धन्यवाद !

संदर्भ :

1. जस्टिन जी. लोंगेनेकर, कार्लोस डब्ल्यू.मूरी, जे. विलियम पेटी 'साख अंकन तथा लघु कारोबार' : समीक्षा एवं अनुसंधान की आवश्यकता।
2. चार्ल्स बी. वेंडल और मैथ्यू हार्वे (मार्च 2010) 'एसएमई साख अंकन': प्रमुख पहल, अवसर और मामले - ऐक्सेस वित्त। वित्तीय क्षेत्र उपाध्यक्ष द्वारा प्रकाशित न्यूज लेटर, मार्च 2006, अंक सं.10 - विश्व बैंक समूह - ऐक्सेस वित्त।
3. लतीमेर एश, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, फेयर, माइसेक एंड कं., सेन रफेल, केलीफोर्निया, यूएसए "साख अंकन : बेहतर सक्षम एसएमई उधार हेतु टूल", एसएमई /मामले, लघु और मध्यम उद्यमों की दुनिया से नई कल्पनाएं खंड 1, सं.2, नवंबर 2000।
4. लघु कारोबार उधार को लाभदायक बनाना : साख अंकन पर वैश्विक सम्मेलन की कार्यवाही, अप्रैल 2-3, 2001, वाशिंगटन, डी.सी - अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम - लघु कारोबार उधार निर्णयों के लिए साख जानकारी और

साख अंकन का महत्त्व - एंडरु जेन्नींग्स, उपाध्यक्ष, फयर आइसेक एंड कंपनी इंक।

5. केनिया में एसएमई उधार हेतु साख अंकन की संभाव्यता, अक्टूबर 2008, वित्तीय क्षेत्र सघनीकरण, केनिया। यह अध्ययन एफएसडी केनिया की ग्रोथ फिन कार्यक्रम के लिए माइक्रो वित्त जोखिम प्रबंधन, एल.एल.सी द्वारा एस बी ए के सहयोग से किया गया।

6. एसएमई ऋण संविभाग में ऋण जोखिम : मॉडलिंग मामले, मूल्य निर्धारण और पूंजी अपेक्षाएं, मिशेल डीश, जोल पेटी, निवर्सिटी रॉबट शुमन, 47 एवेन्यु डी ला फॉर एट नोयर, 67000 स्ट्रासबॉर्ग, बैंकिंग और वित्त का फ्रांस जर्नल 26 (2002) 303-322.

7. एलन एन. बर्जर एंड डब्ल्यू. स्कॉट फ्रेम : लघु कारोबार साख अंकन तथा ऋण उपलब्धता, वर्किंग पेपर 2005-10, मई 2005, वर्किंग पेपर सीरिज, रिजर्व बैंक ऑफ एटलांटा।